साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2556, अधिक भाद्रपद पूर्णिमा, 31 अगस्त, 2012 वर्ष 42 अंक 3

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

न कहापणवस्सेन, तित्ति कामेसु विज्जति।
अप्पस्सादा दुखा कामा, इति विञ्ञाय पण्डितो॥
अपि दिब्बेसु कामेसु, रतिं सो नाधिगच्छति।
तण्हक्खयरतो होति, सम्मासम्बुद्धसावको॥
धम्मपद १८६-१८७, बुद्धवग्गो.

स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा से (भी) कामभोगों की तृप्ति नहीं हो सकती। यह जान कर कि कामभोग अल्प आस्वाद वाले और दु:खद होते हैं, (कोई) पंडित दैवी कामभोगों में भी आनंद प्राप्त नहीं करता। सम्यक संबुद्ध का श्रावक तृष्णा का क्षय करने में लगा रहता है।

मध्यम मार्ग

भगवान बुद्ध के समय देश में दो परंपराएं बहुत प्रचलित थीं।

एक -- कामेसु-कामसुखल्लिकानुयोगो, यानी, काम-भोग में ही सुख मान कर उसमें अनुरक्त रहना, जो कि निश्चित ही हीन मार्ग था। धर्ममार्ग से दूर हुए पृथकजनों यानी अनार्यों का मार्ग था। यह स्पष्टतया अनर्थकारी था।

कामभोग में ही जीवन का सुख मानने वाली एक दूषित परंपरा अत्यंत प्राचीनकाल से प्रचलित थी जो यह नहीं मानती थी कि मरने के बाद किसी प्राणी का पुनर्जन्म होता है। जन्म इसी जीवन के लिए होता है। अतः सुखभोग के लिए उसका अधिक से अधिक लाभ लेना चाहिए। बुद्ध के जीवनकाल का एक आचार्य अजित केसकंबल कहता है कि पशु-पक्षियों में माता-पिता के साथ किये कामभोग पर कोई प्रतिबंध नहीं है। पुत्र युवा हो जाय तो अपनी माता के साथ और पुत्री युवती हो जाय तो अपने पिता के साथ कामभोग करते देखे जाते हैं। निसर्ग का यह नियम सभी प्राणियों पशु-पक्षियों, कीट-पतंगों और सरी-सृपों पर लागू होता है। अतः निसर्ग का यह नियम मनुष्य समाज पर भी वैसे ही लागू होता है। इस पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए। इसीलिए आजीवक काश्यप कहता है- कुतो माता, कुतो पिता?

कामाचार और स्वेच्छाचार की यह मान्यता अत्यंत प्राचीनकाल से कमोवेश मात्रा में चली आ रही है। प्राचीन साहित्य में दासियों के साथ मुनियों के अवैध यौन-संबंध के वर्णन मिलते हैं। एक जगह 'ब्रह्मस्पति' नामक देवता से प्रार्थना की जाती है कि 'उसिज' नामक किसी कामुकी दासी के गर्भ से उत्पन्न 'कक्षीवान' नामक पुत्र को देवताओं की श्रेणी में यज्ञभागी होने के लिए परिगणित कर लिया जाय। *(ऋग्वेद-- १-५-१८-१)*

प्रजापति ब्रह्मा द्वारा अपनी पुत्री के साथ किये गये घृणित जबरन कामाचरण का विवरण भी मिलता है। *(ऋग्वेद-- १०-५-६१-७)*। ऐसे ही पिता-पुत्री तथा माता-पुत्र के कुत्सित और अवैध संबंध का उल्लेख मिलता है। *(अथर्ववेद-- ८-६-७)*। इसी प्रकार ऋग्वेद में भाई-बहन यम-यमी के कामभोग संबंधी अशोभनीय वार्तालाप का वर्णन भी बहुविदित है। *(ऋग्वेद-- १०-१-१०-७/११)*

इनके अतिरिक्त अवैधानिक कामाचार के अन्य प्रसंग भी हमारे सामने हैं। महर्षि परासर का केवट-कन्या सत्यवती से नौका में दुराचार करना। महर्षि विश्वमित्र द्वारा उर्वशी के साथ कामाचरण भी सर्वविदित है ही।

काम एवैकः पुरुषार्थः। *(बार्हस्पत्यसूत्र - ५)*

-- काम-भोग ही जीवन का एकमात्र पुरुषार्थ है। अतः यही श्रेयष्कर है।

अङ्गनालिङ्गनाज्जन्यसुखमेव पुमर्थता।
(सर्वदर्शनसंग्रह - १.४)

- कामिनी के आलिंगन से उत्पन्न सुख पुरुषार्थ का लक्षण है।

ऐसे लोग उन्मुक्त कामभोग को ही जीवन का सबसे बड़ा सुख मानते थे और इसी में लिप्त रहने को जीवन की सफलता मानते थे।

इसी अवैध मान्यता के दर्शन हमें आगे भी होते हैं। जैसे किसी भोगवादी ने कहा--

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः।।
(बार्हस्पत्यसूत्र - ४५)

-- जब तक जीएं सुख से जीएं। पीएं घी ही, चाहे ऋण लेकर ही पीएं। भस्मीभूत देह का पुनरागमन कहां होता है?

जब पुनर्जन्म ही नहीं तब किस कर्म को पाप मान कर उसके फल से डरे?

अनेक प्राचीन ग्रंथों में जहां निर्मल सात्त्विक धर्म का बहुल उपदेश भरा है, वहां इस प्रकार की अधार्मिक बातों का वर्णन यह बताता है कि ऐसे दुराचार का प्रचलन प्राचीनकाल से चला आता रहा है।

बुद्ध के समय भी ऐसी विचारधारा की कमी नहीं थी। ऐसे स्वेच्छाचरण का प्रभाव अजित केसकंबल की मान्यता में दीखता है। उसके मतानुसार 'नत्थि माता, नत्थि पिता' जैसा कुत्सित यौनाचार भी प्रचलित रहा। सम्यक संबुद्ध ने इस प्रकार के सभी

कामाचरण को अतियों का मार्ग बताया और इसके बारे में कहा-- **यो चायं कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगो, हीनो गम्मो पोथुज्जनिको अनरियो अनत्थसंहितो,** यानी यह कामसुख में तल्लीन रहना हीन, ग्रामीण, धर्म से च्युत पृथकजन अनार्यों का मार्ग था, जो कि स्पष्ट ही अनर्थकारक था।

अतियों के इस कुत्सित मार्ग पर तपस्वी सिद्धार्थ ने एक कदम भी रख कर नहीं देखा।

दूसरा अतियों का मार्ग था-- **अत्तकिलमथानुयोगो दुक्खो अनरियो अनत्थसंहितो,** यानी, अपने आपको अत्यधिक कष्ट देना। यह मार्ग अत्यंत दुःख से भरा हुआ था, अनार्यों द्वारा सेवित, अनार्यों का मार्ग था और अनर्थकारी भी था।

उन दिनों भूखे रह कर शरीर को कष्ट देने को बहुत अच्छी तपस्या मानते थे।

उदाहरण स्वरूप--

किसी साधु-संन्यासी का सर्वदा नग्न रहना, सभी आचार-विचारों का सर्वथा त्याग करना, भोजन के बाद थाली और हाथ चाटना, अतिथि को 'आओ भन्ते' कहना, जाते हुए को 'जाओ भंते' कहना-- इस प्रकार कहने वाले से भिक्षा न लेना, न 'ठहरिये' कहकर दी गयी, न निमंत्रित की गयी, न अपने लिए पकायी गयी, न हांडी से सीधे निकाल कर लायी गयी, न ओखल, दंड या मूसल के बीच से लायी गयी, न भोजन करते दो व्यक्तियों के बीच लायी गयी, न गर्भिणी द्वारा दी गयी, न बच्चे को दूध पिलाती महिला द्वारा दी गयी, न देते समय किसी अन्य पुरुष के बीच से निकल जाने पर, न अन्य पुरुष के पास गयी दुश्शील महिला से, न चंदा मांग कर बनायी गयी, न जहां कुत्ता खड़ा हो, मक्खियां भिनभिना रही हों, न पकायी मछलियां, न पकाया मांस, न मद्य, न मेरेय, न तुषोदक (चावल का सड़ा पानी) लिया जाना।

वे संन्यासी एक ही घर से भिक्षा लेते थे, एक ही ग्रास खाते थे, दो घरों से, दो ग्रास, सात घरों से, सात ग्रास। एक ही कड़छी अथवा दो अथवा सात कड़छी ही लेते थे। वह एक दिन छोड़ कर, दो दिन छोड़ कर, सात दिन छोड़ कर या आधे-आधे महीने में एक बार भिक्षा लेते थे।

कुछ श्रमण-ब्राह्मणों की यह भी मान्यता थी :--

वे केवल साक-सब्जी ही खाते थे। केवल हल्का चावल खाकर रहते थे, केवल नीवार, दद्दुल, सेवाल, कण, कांजी, खली, गोबर, तृण तथा वन के कंद-मूल-फल तोड़ कर खाते थे।

कुछ संन्यासी सन का वस्त्र पहनते थे, शवों से उतरे, गलियों में फेंके गये सड़े चिथड़े, वृक्षों के वल्कल, मृगचर्म, कुश के बने, चटाई के बने, काष्ठ के बने, केशों के बने, उल्लू के पंखों से बने वस्त्र पहनते थे।

केश, दाढ़ी, मूंछ के बाल नोच कर उखाड़ते थे, उकडूं बैठते थे, कांटों पर, तख्तों पर, नीचे भूमि पर ही सोते थे, एक ही पार्श्व में सोते थे, शरीर पर धूल, गर्दा लपेटे, खुली जगह में सोते थे, जहां जैसी जगह मिले वहीं बैठ जाते थे। मैली, सड़ी-गली गंदी चीजें खाते थे, मैला जल भी पीते थे। प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल तीन बार स्नान करते थे।

कोई-कोई आधे-आधे मास तक निराहार रहते थे और इसी को साधना मानते थे। वे संयमित चित्त से शील, समाधि, प्रज्ञा की भावना नहीं कर पाते थे। न उन्हें इनका साक्षात्कार ही होता था।

शाक्य राजकुमार ने भी अनेक कष्टदायक तपस्याओं को आजमा कर देखा। उन्हीं के शब्दों में-- 'उस समय मुझको यह ज्ञात हुआ कि क्यों न मैं दांत-पर-दांत रख कर, जिह्वा से तालू को दबा कर, मन से मन का निग्रह करूं, उसे दबाऊं, पीड़ित करूं। तब मैंने दांत-पर-दांत रख कर, जिह्वा से तालू को दबा कर, मन से मन का निग्रह किया, उसे दबाया, उसे संतप्त किया। ऐसा करने पर मुझे पसीना छूटने लगा। जैसे कोई बलवान पुरुष कमजोर पुरुष को सिर या कंधे से पकड़ कर जोरों से झकझोरे, उसे दबाये या संतप्त करे। उसी प्रकार मेरी कांखों से पसीना छूटने लगा। उस समय मुझमें अदम्य वीर्य (उद्योग) प्रारंभ हो चुका था। देहदंडन के द्वारा मेरी स्मृति क्षीण हो गयी थी फिर भी मैं नितांत दुःखविमुक्ति हेतु इस कष्टदायक मार्ग पर आरूढ़ था।

उसके बाद मुझे विचार हुआ कि क्यों न मैं श्वासरहित ध्यान भावना ही करूं। तब मैंने मुख और नासिका से श्वास का आना-जाना रोक लिया। तब मुझे, मुख और नासिका से श्वास-प्रश्वास को रोकने के बाद अपने कर्णछिद्रों से निकलने वाली वायु का अत्यधिक शब्द सुनायी देने लगा। जैसे कि लोहार की धौंकनी से धौंके जाने पर बहुत अधिक शब्द होता है। उस समय मुझमें अदम्य वीर्य (उद्योग) प्रारंभ हो चुका था। देहदंडन के द्वारा मेरी स्मृति क्षीण हो गयी थी तिस पर भी मेरा शरीर नितांत दुःखविमुक्ति हेतु तैयार था।''

असीम वैभव विलास में पला हुआ सुकुमार सुकोमल राजयोगी इस दुष्कर चर्या में दृढ़तापूर्वक लग गया और इसकी चरम सीमा तक का प्रयोग कर के देख लिया। उन दिनों के प्रचलित सभी देहदंडों की तपश्चर्या करके देख ली। काया पर अनेक प्रकार के आतापन-संतापन का प्रयोग कर के देख लिया। और जब उपवास करने पर तुला तो ऐसे उपवास किये कि शरीर को सुखा कर कांटा बना लिया। कहीं मांस-मज्जा का नामोनिशान नहीं बचा। केवल हड्डियों का पिंजर और उस पर सिकुड़ा हुआ चाम। पैंतीस वर्ष की अवस्था में अस्सी वर्ष के बूढ़े से भी बदतर हालत हो गयी। स्वर्णिम आभा वाले सुंदर शरीर का रंग काला पड़ गया। जगह-जगह मैल की परतें जम गयीं। कूल्हे ऐसे हो गये जैसे ऊंट के पांव। रीढ़ की हड्डी के उन्नत-अवनत कांटे ऐसे हो गये जैसे मूंज की ऐंठनभरी रस्सी। पसलियां ऐसी हो गयीं, जैसे जीर्ण-शीर्ण मकान की ढीली होकर अलग-थलग हुई कड़ियां- लकड़ियां। आंख के गड्ढों में पुतलियां ऐसी, जैसे मानो गहरे कुएं में किसी तारे का प्रतिबिंब दीखता हो। सिर पर की चमड़ी ऐसी हो गयी जैसे कच्ची तोड़ी हुई लौकी धूप में सूख कर सिकुड़ गयी हो। पेट की चमड़ी पीठ की हड्डी से जा जुड़ी। उसे पकड़ना चाहता तो रीढ़ की हड्डी के कांटे हाथ में आ जाते। शरीर इतना कृश और दुर्बल हो गया कि जिस अंग को हाथ का सहारा दे कर उठना चाहा, वहां की सड़ी हुई जड़ के लोम उखड़-उखड़ कर गिर पड़ते। मल-मूत्र त्यागने के लिए उठ कर चलना चाहता तो एक कदम भी न चल पाता। वहीं भरभरा कर गिर पड़ता। ऐसी भी काय-क्लेश की पराकाष्ठा।

लगभग छह वर्ष तक देह-दंडन की ऐसी कठोर दुष्कर तपश्चर्या कर के देखा कि अंतर्मन की गहराइयों में जो अंतर्निहित क्लेश थे वे वैसे के वैसे हैं। जरा भी दूर नहीं हुए।

तब बात समझ में आयी कि जिस प्रकार काम-भोग,

विलास-वैभव का जीवन जीते हुए कोई व्यक्ति एक अति का जीवन जीता है और मुक्ति से दूर रहता है, वैसे ही काय-उत्पीड़न की तपश्चर्या में लगा हुआ व्यक्ति दूसरी अति का जीवन जीता है। वह भी इसी प्रकार मुक्ति से दूर रहता है। सुधारना मन को है। उसे विकारों से विमुक्त करना है। इस विमुक्ति की साधना के लिए दोनों अतियों को छोड़ कर मध्यम मार्ग की खोज आवश्यक है।

अतः युक्त आहार ग्रहण कर के शरीर को आर्य साधना के योग्य बना कर स्वयं अपने भीतर मध्यम मार्ग की साधना की खोज में लग गया। अनेक आंतरिक बाधाओं का सामना करता हुआ, अंततः अपने अनेक जन्मों में संचित संवर्धित पुण्य पारमिताओं का अपरिमित बल जागा और विपश्यना का मुक्तिदायी आर्य अष्टांगिक मार्ग उजागर हुआ।

भगवान ने उन दोनों अतियों वाले अनर्थकारी मार्गों को त्याग कर मज्झिमा पटिपदा, यानी मध्यम मार्ग खोज निकाला और उसे ही लोगों को सिखाया जो कि अभिज्ञान, संबोधि तथा निर्वाण की ओर ले जाने वाला है। इसे **अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो** यानी आठ अंगों वाला आर्य मार्ग कहा। आर्य मार्ग इस माने में कि कैसा ही अनार्य व्यक्ति क्यों न हो, यदि वह इसे अपनाता है तो आर्य बन ही जाता है।

काम-भोगों का बंधन स्पष्ट हुआ। देह-दंडन की निस्सारता स्पष्ट हुई। कर्मकांडों की निष्प्रयोजनता स्पष्ट हुई। विभिन्न दार्शनिक मान्यताओं के जंजाल टूटे। स्वानुभूति के आधार पर जागी हुई भावनामयी प्रज्ञा के बल पर अंधमान्यताजन्य दर्शन सम्यक-दर्शन बना। बौद्धिक चिंतन-मनन वाला भ्रामक ज्ञान सम्यक-दर्शन के आधार पर प्रत्यक्ष स्वानुभूतियों वाला सम्यक ज्ञान जागा। काल्पनिक विमुक्ति सम्यक विमुक्ति बनी। परम कल्याणी सम्यक संबोधि की उपलब्धि हुई। सारे अंतर्निहित क्लेश छिन्न-भिन्न हुए। चित्त समस्त विकारों से नितांत विमुक्त हुआ। प्रज्ञाविमुक्ति जाग्रत हुई। नित्य, शाश्वत, ध्रुव, प्रणीत, प्रशांत परम सत्य का साक्षात्कार हुआ। सिद्धार्थ राजकुमार सम्यक संबोधि प्राप्त कर सम्यक संबुद्ध बना।

उत्तर भारत में बुद्ध का धर्म फैलाने का पुनीत कार्य धर्मबंधु करते रहे। अनेक समझदार लोगों ने इस मार्ग को इसलिए आसानी से अपना लिया क्योंकि इसमें कोई अंधविश्वास नहीं था, अंधमान्यता नहीं थी। अपने बारे में जो स्वयं अनुभूति जागे उसी के आधार पर साधना आगे बढ़ती है और वैज्ञानिक होने के कारण अच्छे फल भी देने लगती है। इस साधना से सारे कर्म और कर्मफल सुखद हो जाते हैं। यह सच्चाई अनेकों को समझ में आने लगी और उन्होंने इस सरल स्वच्छ मार्ग को सहर्ष अपनाया।

परंतु फिर भी भारत के इस विशाल भूखंड में कितने ही लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की अंधमान्यताओं, अंधविश्वासों से जुड़े हुए थे। उनको यह सहज सरल मार्ग समझने और अपनाने में कठिनाई हुई। परंतु जिन्होंने अपनाया उनका मंगल ही हुआ। ऐसी अंधमान्यताओं, अंधविश्वासों से बाहर निकल कर इस मंगल पथ पर कदम-कदम चलते हुए हम भी अपना मंगल साधें, कल्याण साधें!

कल्याणमित्र,

सत्यनारायण गोयन्का

दीक्षाभूमि, नागपुर में विपश्यना का महाअधिवेशन

आगामी २३ अक्टूबर दिन मंगलवार की सायंकाल ६ से ९ बजे तक नागपुर के विशाल एवं प्रख्यात **दीक्षाभूमि** मैदान में 'विपश्यना सेवक संघ' की ओर से विपश्यना की जागृति हेतु एक महाअधिवेशन आयोजित किया जा रहा है। यह वही मैदान है जहां १४ अक्टूबर, १९५६ को भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के आह्वान पर लाखों की संख्या में लोग एकत्र हुए थे और एक महामंत्र की भांति **बुद्धं सरणं गच्छामि, धम्मं सरणं गच्छामि, सङ्घं सरणं गच्छामि** का समवेत स्वर में उद्घोष हुआ था। बाबासाहेब ने कहा था कि ''जो बुद्धधम्म मैं तुम्हें देता हूं उसे मुर्दे की तरह गले में मत पहन लेना। इसे जीवन में उतारना है।'' उनके इस कथन को हमें सत्य सिद्ध करना है। वस्तुतः भगवान बुद्ध की बतायी हुई वास्तविक विद्या विपश्यना के अभ्यास से धर्म को जीवन में उतारना अत्यंत आसान हो जाता है। इसे समझाने के लिए विश्वविपश्यनाचार्य पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायण गोयन्काजी **२३ अक्टूबर** की **सायं ७ बजे** इस महासभा को संबोधित करेंगे और **आनापान** की दीक्षा देंगे। अतः अक्टूबर १९५६ की भांति इस बार भी बड़ी से बड़ी संख्या में पधार कर आप सब इस सुअवसर का लाभ अवश्य उठाएं। अधिक जानकारी के लिए **संपर्क**-- श्री दिगंबर बी. धांडे- ०९८६९०६६१३३ या श्री गौतम गायकवाड- ०९८२१३६२२८३.

चैत्यभूमि, दादर, मुंबई में पूज्य गुरुदेव का धर्म-प्रवचन

इसी प्रकार बाबासाहेब के पुण्यदिवस के उपलक्ष्य में बुधवार, ५ दिसंबर २०१२ को चैत्यभूमि मैदान, दादर (मुंबई) में पूज्य गुरुदेव श्री गोयन्कजी का सार्वजनिक प्रवचन सायं ७ बजे आयोजित किया गया है। यहां भी लोगों को आनापान की दीक्षा दी जायगी। अतः आप सभी बड़ी संख्या में सपरिवार अपने ईष्टमित्रों सहित पधार कर उनके **धर्म-प्रवचन** और **आनापान-दीक्षा** से लाभान्वति हों। **संपर्क**-- उपरोक्त मोबाइल्स पर।

मंगल मृत्यु

१. वाराणसी के विपश्यनाचार्य श्री सुशीलकुमार मेहरोत्रा का ३१ जुलाई को ल्युकेमिया के कारण निधन हो गया। उन्हें **धम्मचक्क** विपश्यना केंद्र का आचार्य नियुक्त किया गया था परंतु कार्यभार संभालने के पहले ही वे दिवंगत हो गये। वे और उनकी पत्नी श्रीमती वीणा धम्मचक्क बनने के पहले से ही धर्मसेवा से जुड़े हुए थे। कुछ वर्षों पूर्व इनके इकलौते पुत्र का किसी दुर्घटना में देहांत हुआ परंतु इन्होंने इस गहन दुःख को बड़े धैर्य से सहन किया और अपनी सेवा में कोई कमी नहीं आने दी। वे अपने पीछे पत्नी और एक मात्र पुत्री एवं उसके परिवार को छोड़ गये हैं। इन सेवाओं के महान पुण्य के फलस्वरूप दिवंगत को शांतिलाभ प्राप्त हो।

२. नाशिक के वरिष्ठ सहायक आचार्य श्री शाम भाटिया ने विगत २५ मई को अपना शरीर छोड़ दिया। वे भी **धम्मनासिका** विपश्यना केंद्र से सभी प्रकार की सेवाओं के साथ प्रारंभ से ही जुड़े हुए थे। वे अनेक शिविरों में साधकों की सेवा करते हुए बहुतों को धर्मलाभ ले सकने में सहायक हुए। इस महान पुण्य के फलस्वरूप दिवंगत को शांतिलाभ प्राप्त हो।

सहायक आचार्य वार्षिक सम्मेलन

धम्मगिरि पर सहायक आचार्यों का विशेष सम्मेलन कुछ विशेष कारणों से **७-८-९ दिसंबर** को आयोजित किया गया है जो कि पहले ५-६ जनवरी, २०१३ को होने वाला था। असुविधा के लिए खेद है परंतु पूज्य गुरुदेव इस सम्मेलन में पूरे समय उपस्थित रह कर आचार्यों को विशेषरूप से निर्देश एवं प्रश्नों के उत्तर देने वाले हैं। अतः सभी आचार्यों से अनुरोध है कि वे इसमें अवश्य भाग लें तथा बदली हुई तिथियों के अनुसार अपने कार्यक्रम बनायें। (कृपया भावी कार्यक्रम सूची देखें।)

प्रो. अंगराज चौधरी को राष्ट्रपति-सम्मान

विपश्यना विशोधन विन्यास के पालि के प्राध्यापक एवं नव नालंदा महाविहार के भूतपूर्व प्रोफेसर श्री अंगराज चौधरी को महामहिम राष्ट्रपति द्वारा १९ जून, २०१२ को **'पालि साहित्य में निपुणता एवं पाण्डित्य'** के लिए राष्ट्रपति भवन में सम्मानित किया गया।

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

नये उत्तरदायित्त्व

आचार्य

१-२. श्री योगेश एवं श्रीमती मयूरी शाह, मुंबई
3. Mrs. Ella Mae Stowasser, Canada

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती मृदुला मोदी, मुंबई
२-३. श्री रोहिणीकांत एवं श्रीमती कीर्ति शर्मा, नवी मुंबई
४. श्रीमती इंदु भरत शाह, मुंबई
५. श्रीमती चंद्रिका कामदार, मुंबई
६-७. श्री महेंद्र एवं श्रीमती रंजन शाह, मुंबई
८-९.श्री सुदर्शन एवं श्रीमती सुधा ग्रोवर, ठाणे
१०. श्री संदीप शेट्टी, मुंबई
११. श्रीमती अनीता शेट्टी, मुंबई
१२. सुश्री नेहा श्राफ, मुंबई

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्रीमती ए.पी. राजेश्वरी, चेन्नई
२-३. श्री भरत एवं श्रीमती इंदु ग्रोवर, ठाणे
४. श्री प्रेमचंद पाल, झांसी
5-6. Mr. Esnil & Mrs. Nadir Schiavinatto, Brazil
7-8. Mr. Morgan Veness & Mrs. Haruka Kokubu, Australia

बालशिविर शिक्षक

१. डॉ. रविचंद्र सी. बंगलुरु
२. श्रीमती वर्षा राघवन, बंगलुरु
३. श्रीमती मुक्ता अय्यिप्पा, बंगलुरु
४. श्रीमती आर. चंद्रमथी, बंगलुरु
५. श्री अरुण अंजारकर, कोल्हापुर
६-७. श्री दिलीप एवं श्रीमती कल्पना करांडे, कोल्हापुर
८. श्री विनायक पुजारी, कोल्हापुर
९. श्रीमती स्वरूपा कोरगांवकर, कोल्हापुर
१०. श्री सुनील चौगुले, कोल्हापुर
११. श्री राजुल लिनेसवाला, कोल्हापुर
१२. कु. वैशाली पाटील, पुणे
१३. श्री आर. श्रीनिवासन, चेन्नई
१४. श्री एम. श्रीधरन, चेन्नई
१५. श्रीमती अश्विनी धनेश्वर, अहमदनगर
१६. श्री जगदीश असावा, संगमनेर
१७. श्री चंद्रकांत अंबेकर, नाशिक
१८. श्री रविंद्र खरात, ठाणे
१९. श्री मंगला पांडे, मुंबई
२०-२१. श्री अभिषेक एवं श्रीमती सुप्रिया शेंडे, मुंबई. २२. श्रीमती पुष्पा बडादरे, मुंबई
२३. श्रीमती सरिता वर्मा, करनाल
२४. श्री प्रवीण वलोईकर, नागपुर
25. Ms. Carin Andren Sweden

पूज्य गुरुदेव एवं माताजी की म्यंमा यात्रा

आगामी २२ दिसंबर के आस-पास पूज्य गुरुदेव एवं माताजी भी अपनी जन्मभूमि और धर्मभूमि म्यंमा जा रहे हैं। इस प्रकार वहां के धर्मपुत्रों-धर्मपुत्रियों, अनेक पूर्व परिचितों तथा मित्रों से भेंट होगी, श्वेडगोन पगोडा में सामूहिक साधना होगी और पूज्य गुरुदेव के कुछ धर्म-प्रवचन भी होंगे।

शरद पूर्णिमा के उपलक्ष्य में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

२८ अक्टूबर, २०१२, **रविवार**, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क : मो.** 09892855692, 09892855945, **फोन नं.:** 022-28451170, 33747543, 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः ११ से सायं ५ तक, प्रतिदिन) **ईमेल Registration:** oneday@globalpagoda.org; **Online Registration:** www.vridhamma.org

दोहे धर्म के

काम क्रोध मद मोह में, जीवन दिया गँवाय।
जागे विमल विपश्यना, जनम सुफल हो जाय॥

बंधन ही बंधन बँधे, जब जब भोगें भोग।
जगे द्वेष से दोष ही, जगे राग से रोग॥

जब देवे भवचक्र को, धर्मचक्र से काट।
तो विमुक्ति निर्वाण का, वैभव बढ़े विराट॥

वही पूज्य है, बुद्ध है, महावीर है सोय।
जो खोले निज ग्रंथियां, काय विपश्यी होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

भवसागर तिरणै चल्यो, गळै बांध चट्टान।
काम भोग लिपट्यो रह्यो, चावै पद निरवाण॥

जनम मरण स्यूं छुटण रो, किसो मचायो सोर।
काम क्रोध स्यूं छुटण पर, जरा करै ना गौर॥

करै बात तो ब्रह्म री, काम भोग मँह लीन।
ढोंग रचायो धरम रो, करदी आयुस खीण॥

लिपट्यो मूरख नरक मँह, काम भोग ब्यभिचार।
धरम मिल्यो तो सहज ही, छुटग्यो मिथ्याचार॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556**, **अधिक भाद्रपद पूर्णिमा, 31 अगस्त, 2012**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org